RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

जनजातिय लोक साहित्य का स्वरुप: देओरी लोककथाओं के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. लखिमा देओरी

अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज़, नाम्साई अरुणाचल प्रदेश

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 Apr 2019

Keywords
लोक साहित्य, भारत की पूर्वोत्तर जनजातियाँ, देओरी जनजाति, देओरी जनजाति का लोक साहित्य, आस्था, संस्कृति, लोक मान्यताएँ।

*Corresponding Author
Email: khim987@gmail.com

ABSTRACT

भाषिक विविधता, भारतीय संस्कृति की पहचान है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भारत के उत्तर–पूर्व प्रदेश में देखा जा सकता है। यहाँ विविध जाति के लोग रहते हैं। भारत के पूर्वोत्तर में आठ राज्य हैं– अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा। इस क्षेत्र में मुख्यतः विभिन्न आदिवासी समुदाय रहते हैं, जिसके कारण यहाँ बहुभाषिकता देखने को मिलती है। हर जातीय समूह अपनी सांस्कृतिक और भाषाई अतीत से अपनी अलग पहचान रखते हैं। भारत में मुख्यतः चार भाषा परिवार है, जिसके अंतर्गत भारत की अनगिनत भाषाएँ आती हैं। पूर्वोत्तर भारत में मुख्यतः तिब्बती–बर्मन भाषा परिवार की भाषाएँ बोली जाती है। इस लेख में पूर्वोत्तर के देओरी समुदाय के लोक साहित्य का स्वरुप प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। साथ ही लोक साहित्य का स्वरुप भी। भारत के पूर्वी छोर पर स्थित असम राज्य में मंगोल नस्ल की कई जनजातियाँ हैं, जिनमें से देओरी एक प्रमुख जनजाति है। इन्होंने अपनी भाषा, धर्म, आस्था, लोक–कथा, लोक– गीत आदि जातीय विशेषताओं को संभाले रखा है।

लोकसाहित्य में जनमानस के राग–विराग का यथार्थ चित्रण होता है। व्यक्ति और समाज की मानसिकता लोकसाहित्य में इस ढंग से अभिव्यक्त होती है कि वह मनुष्यमात्र के लिए एक अमूल्य धरोहर बन जाती है। मूल संस्कृति ही लोक संस्कृति है । एक समाज का लोक जीवन, लोक धर्म, लोक परम्पराएं, लोक कलाएं, लोक गीत आदि सभी को हम भारतीय संस्कृति के रूप में देख सकते हैं । इसको जब हम साहित्य में अभिव्यक्त करते हैं, तो यही ‘लोक संस्कृति’ कहलाती है । इसीलिए कहा जाता है, साहित्य ही समाज का दर्पण है ।

आदिम अवस्था से लेकर वर्तमान अवस्था तक घात–प्रतिघात, संघर्ष–मिलन, द्वन्द–प्रतिद्वन्द सभी लोक साहित्य में समाहित किए हुए है । लोकसंस्कृति और लोक भाषा, लोक जीवन रूपी व्यापर को जानने का एक जरिया है । लोक साहित्य में ये दोनों ही एकत्र है । “संस्कृति विषय वस्तु और पदार्थ एवं मनोजगत की सारवत्ता से जुड़ी है, तो भाषा उसके रूप की अभिव्यंजना से । लोकगीतों और लोक कथाओं के सन्दर्भों में ही लोक चिंता, लोक साहित्य और संस्कृति की अन्तःसलिला के रहस्य को खोजकर हम लोक के पारंपरिक जीवन–मर्म का उद्घाटन कुछ अंशों में अवश्य कर सकेंगे ।”[1] प्रस्तुत आलेख को सांस्कृतिक सन्दर्भ में संजोने का अल्प–सा प्रयास किया गया है ।

व्यक्ति, जाति और वातावरण के तत्त्व परंपरागत आचार–विचार और संस्कारों का रूप धारण करके संस्कृति के बम्ब को साकार बनाते हैं । प्रत्येक जाति, समाज अथवा राष्ट्र अपनी परम्पराओं की रोशनी में ही चमकते हैं और आसानी से पहचाने जा सकते हैं। संस्कृति के द्वारा ही प्रत्येक समाज के सामाजिक आदर्शों, मूल्यों एवं मानदंडों का सृजन होता है । “जाति की संस्कृति और धर्ममत के अनुसार इनके उपरी आकार–प्रकार में विशेष महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसमें आमुष्मिकता की चिंता बहुत कम थी।”[2]

भारत के पूर्वी छोर पर स्थित असम राज्य में मंगोल नस्ल की कई जनजातियाँ हैं, जिनमें से देओरी एक प्रमुख जनजाति है। विगत समय से देओरी समुदाय असम और अरुणाचल प्रदेश के पहाड़ी की तलहटी में बहुसंख्या में बसे हैं। यह समुदाय असम के मूल स्थानीय निवासियों में से एक है। इनकी भाषा तिब्बती–बर्मन भाषा परिवार के अंतर्गत आती है। ये चीनी–तिब्बती परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। इन्होंने अपनी भाषा, धर्म, आस्था, लोक–कथा, लोक–गीत आदि जातीय विशेषताओं को संभाले रखा है। देओरी समुदाय असम के डिब्रूढ़, शिवसागर, धेमाजी, लखीमपुर, सोनितपुर आदि ज़िलों में निवास करते हैं और अरुणाचल प्रदेश के नामसाई और चांगलांग ज़िले में भी बहुसंख्या में निवास करते हैं। हाल ही में की गई जनगणना के अनुसार असम की देओरी समुदाय के 133 गाँव को मिलाकर, इनकी जनसंख्या 2,45,000 हैं और अरुणाचल प्रदेश में 2001 की जनगणना के अनुसार 5693 जनसंख्या है। भोगौलिक तौर पर असम पहाड़ी और मैदानी छेत्र में बटाँ हुआ है। सामान्यतः इनकी बस्तियाँ नदी के आसपास होती है अर्थात् बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में रहते हैं। देओरी समाज में जीविकोपार्जन के साधनों में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। देओरी समाज में पुरुष और महिलाएँ दोनों ही बहुत मेहनती होते है, लेकिन पुरुषों के मुकाबले देओरी महिलाएँ अधिक काम करती है।

देओरी समाज के लोग स्वभाव से काफी आध्यात्मिक होते हैं। देओरी जनजाति ‘कुंदी गिरा’ धर्म का पालन करते है। सामान्यतः इन्हें पुरोहित समुदाय कहा जाता है, क्योंकि असम में जितने भी साम्राज्य हुए जैसे आहूम, सुतिया आदि उन साम्राज्यों में देओरी पुरोहितों का स्थान राजपुरोहित का था। हालाँकि यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यह ब्राह्मण व

[1] भीम सिंह मलिक, हरियाणा लोक साहित्य सांस्कृतिक सन्दर्भ, पृ. vii

[2] हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ 122

RRIJM 2015, All Rights Reserved

हिन्दू पुरोहितों और उनके अनुष्ठानों से बहुत भिन्न होते हैं । देओरी जनजाति अपने घर के एक कोने में प्रार्थना घर बनाते है, जहाँ कोई मूर्ति आदि नहीं होती क्योंकि ये मूर्ति पूजा नहीं करते। अन्य जनजातियों की तरह यह भी प्रकृति और अपने पूर्वजों की पूजा तो करते हैं। साथ ही, अपने आदिम पुरातन देवी–देवताओं को पूजते हैं। मुख्यतः इनके तीन देवी–देवता हैं – कुंदी मामा, बोलिया बाबा या पिसादेमा तथा तामेश्वरी देवी या पिसासी, इनके अलावा और भी कई देवी–देवताएँ हैं – बाकाम, माक, मिराची, बुरा दांगोरिया, किन, दुआ चितेरा, अचिरा, चाक यू, घर देओ, यान तेब्रा, मिक चिबा आदि। अन्य जनजातियाँ पुरोहित होने के कारण इन्हें काफी सम्मान देती हैं। देओरी जनजाति के मुख्यतः चार वंशज हैं – दिबोंग्या, तेंगापोनिया, बोर्गिया, पातोर्गोया। फिर उनके भी चैबीस उपवंशज हैं। जैसे – ब्रुको बोंखो मासिया बोंखो, चाकुसारु, लाफारू, बोदे आदि बोंखो।[3]

भारत से पातोर्गोया वंशज लुप्त हो गया है। लेकिन हाल ही में विशेषज्ञों के एक समूह के अनुसार देओरी समाज का संबंध म्यांमार से भी बताया गया है। प्राथमिक जांच के अनुसार म्यांमार के काचिन प्रान्त में पातोर्गोया वंशज के होने का सुराग मिला है। एक ही उपवंशज के अन्दर शादी करना सख्त मना है और एक से अधिक शादी तभी कर सकते हैं, जब पहली पत्नी का देहांत हो गया हो अन्यथा पहली पत्नी से पुत्र न हो। एक ही वंशज में शादी करने पर क्या बुरा परिणाम होता है, इसकी भी लोक कथाएँ मौजूद हैं ।

देओरी जनजाति जोयधाम अर्थात पटकाई पहाड़ को अपना मूल स्थान मानते हैं । वहाँ किस तरह से पहुँचे इसका वर्णन उनके मौखिक लोक गीतों में सुनने को मिलता है–

> “अरेमत अरिलो केरामत धरिलो जोयधामोत पतीलो थान
> जोयधाम परबातोर पारा साई पाथियालो सदियार बाताते सूरा
> तारे पासोते साई पाथियालो सादियार पुताला घुनरा”

पुरखों के विस्थापन, पलायन और बसाहट की कथाएँ दरअसल अपने गर्भ में उन समाज का ही नहीं, मनुष्य मात्र के विकास और इतिहास का इतिवृत्त लिए होती है, जिसके विश्लेषण और शोध की आवश्यकता है। किसी समाज की छुटी हुई कड़ियाँ इन लोक वाणी में खोजी जा सकती है । उपर्युक्त लोक गीत के ज़रिए ही देओरी समाज को अपने वजूद का ज्ञान है । अन्यथा पटकाई पहाड़ों को जोयधाम कहा जाता था, इसका ज्ञान भी न होता । कई आदिवासी जातियां विभिन्न प्रदेशों में बसी हुई हैं । जो संभवतः कई पीढ़ियों पहले अर्थोपार्जन की दृष्टि से घूमती, भटकती अपनी मूल उद्‌गम स्थान से दूर दूसरे प्रदेश में जा बसे । इसीलिए एक ही आदिवासी जाति एक से अधिक प्रदेशों में मिलती है । जैसे कि भील मध्य प्रदेश के मालवा में बसे हुए हैं और राजस्थान में भी उनका निवास है । वरली जनजाति दक्षिण गुजरात के साथ–साथ उत्तरी महाराष्ट्र में भी पाई जाती है ।

कला और संस्कृति का संरक्षण इस समाज ने बखूबी किया है । सृजन वहीं होता है, जहाँ श्रम होता है। श्रमजीवी, श्रम से जुड़े लोग जहाँ भी रहते हैं, वहीं सृजन भी होता है । कलाओं का विकास भी वहीं होता है । जनजाति समाज पढ़े–लिखे न होने के कारण जो भी देखते थे, उनका रेखांकन करते थे । जैसे जानवरों को देखकर वे अपने रेखांकन में उनको बनाते थे । चूँकि वे अनपढ़ थे इसीलिए वे उनका रेखांकन करते थे, जिससे वे सहज मौलिक, लोक कलाओं का, लोक संस्कृति का, लोक जीवन के मूल्यों का और जो जीवन में जीते हैं, उसका रेखांकन करते थे, साथ–ही–साथ विकास करते थे ।

जब से सृष्टि बनी और मनुष्य ने बोलना और सोचना शुरू किया, शायद तभी से कल्पना ने उड़न भरना शुरू कर दिया । मानव ने जब अपनी कल्पना को अभिव्यक्त किया, कहकर सुनाया, तो वह ‘कहानी’ बन गई । ये कथा, कहना, सुनना, सुनाना– वह विधा है, जो लोक से जुड़ी होती है । विश्वभर में मनुष्य या एक समाज अपने–अपने ढंग से अपनी कल्पानाओं को, अनुभवों को कई विधाओं में ढाल रहा है । लोक की यही कल्पनाएँ, अनुभव निष्कर्ष रूप में लोक कथाओं का रूप लेते हैं । सृष्टि और मानव का उद्‌गम और प्रकृति का भेद को जानने की जिज्ञासा, विभिन्न मिथकों का रूप लेती है । लोक कथाओं के साथ एक आदर का भाव जुड़ा रहता है । जनजातियों के पास किसी भी तरह का धर्मग्रन्थ, शास्त्र आदि नहीं होता इसीलिए ये लोक कथाएँ या मिथक एक विरासत की तरह सदियों से हर बरस किसी–न–किसी अनुष्ठान के समय दोहराए जाते हैं । जनजातियों की विरासत कोई महल, धर्मग्रन्थ आदि नहीं होते बल्कि सम्पूर्ण प्रकृति है । प्रकृति ही उनकी आस्था का केंद्र है । इन लोक कथाओं को गढ़ने वाले कोई अनाम ही होते हैं । लोक कथाएँ मौखिक होती है अर्थात वे इन्हें लिखते नहीं, कहते हैं। सम्प्रेषण में कभी कुछ छुट जाता है, तो कभी जुड़ जाता है । हर कथा कहने वाला या सुनने वाला, कुछ–न–कुछ अपना भी जोड़ता या घटाता है । इसीलिए एक ही कथा को कहने का ढंग बदलता रहता है । कभी– कभी तो नायक तक बदल जाते है । किन्तु बदलने के बावजूद कथा का आधार वही रहता है ।

लोक कथाएँ या मिथक विश्व के हर समाज, हर भाषा में होते हैं । जनजाति की लोक कथाओं की एक विशेषता यह है कि वे अपनी संस्कृति के अनुरूप और अपनी तत्कालीन समाज के अनुसार उनकी व्याख्या भी करते हैं । उनके जीवनक्रम में जो कुछ भी घटता है, जिसे वह देखता, सुनता या अनुभव करता है या कुछ नए प्रयोग करता है, उसे वह अपनी कथाओं में दर्ज़ कर लेता है । ये सब कैसे हुआ या क्यों हुआ ? इन सब बातों की व्याख्या वह अपनी कथाओं के माध्यम से करता रहता है । इन कथाओं की सबसे ख़ास बात– कल्पना की उड़ान के साथ–साथ धरती के भीतर तक इनकी पहुँच है, जो अपनी जड़ों को छूती है । उनकी कल्पना एक तार्किक एवं मानवीय रूप ले लेती है, और यथार्थ की ठोस ज़मीन उन्हें अतिश्योक्ति से बचाती है ।

जनजातियों ने सृष्टि, पृथ्वी और मानव के साथ–साथ प्रकृति के विभिन्न रूपों को भी अपनी कथाओं के पात्र बनाए हैं । भिन्न–भिन्न जनजातियों में, भिन्न–भिन्न भौगोलिक स्थितियों के अनुरूप, भिन्न–भिन्न व्याख्याएँ हुई हैं । जैसे– बादल, बिजली, नदी, मछली, जंगल, पहाड़, सूरज, चाँद आदि के सृजन की कथा कहते हैं । तथा प्रेम के अनेक रूपों की कथाएँ सूनाते और जीते हैं । ये कथाएँ मनुष्य से लेकर, जानवरों तथा उनके इष्ट देव तक के प्रेम से भरी है । ये

---

[3] Sarmah, thakur G.C (1972) p.34, The plain tribes of Lakhimpur, dibrugarh, Sibsagar, Nowgong, Tribal Research Institute, Shillong.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कथाएँ प्रागैतिक काल से पीढ़ी–पीढ़ी चले आ रहे हैं । समय के साथ कभी–कभी पात्रों के नाम बदल जाते हैं, किन्तु उसमें निहित विचार, संवेदना आदि वही रहती है । इस विषय पर ताऐड (Taid) का कथन एक दम सही बैठता है, "As far as characterization is concerned, taking into account both the human and the non-human world, we have portrayals of the good and the bad, the kind-hearted and the cruel, the clever and the stupid, the trickster, the wise and the foolish, the intelligent, the plotter, the gullible, the innocent, the adventurous, the pioneer, the diviner, the miser, the treacherous – in short, a fairly wide spectrum of characters."[4] पूर्वोत्तर के देओरी जनजाति की लोक कथाओं में पशु के मनुष्य बनने तक की कथाएँ मिलती हैं । यह जनतांत्रिक प्रणाली के अस्तित्व की कथा है, जिसके पात्र पहले पशु थे, फिर अर्ध–मनुष्य और अंत में मनुष्य बनकर रह गए । ये अपनी भाषा में भजन कीर्तन करते हैं। यह अपना परिचय "जिमोसोया" कहकर देते हैं अर्थात सूर्य और चन्द्र के पुत्र।[5]

मनुष्य अपनी कल्पना द्वारा सृष्टि, सृजन जैसे प्रश्नों के उत्तर देता आया है । इन्हें सवालों को बाद में विज्ञान द्वारा तर्क से सुलझाया गया । मनुष्य अपनी कल्पना के बल पर समस्याओं के उत्तर देता रहा और वही मिथक कहलाते हैं । बहुत से मिथक पशु, मनुष्य एवं संसार के सृजन को व्याख्यायित करते हैं, तो कुछ यह बताते हैं कि किन्ही पशुओं में वैसी प्रवृत्तियाँ कैसे आई और वे ऐसा आचरण क्यों कर रहे हैं ? वह यह भी बताते हैं या कहिए सुलझाते हैं कि कोई प्राकृतिक घटना घटने के पीछे कारण क्या है, क्यों हुआ आदि । साथ ही उनके समाज या समुदाय में किये जाने वाले अनुष्ठान और उत्सवों का उद्‌भव कैसे हुआ । ये सभी तथ्य सुदूर अतीत में घटित माने जाते हैं । कई मिथकों के मुख्य पात्र मनुष्य न होकर, प्रायः मनुष्य के गुण होने हैं । इस प्रकार की लोक कथाएँ देओरी समाज में बहुत कम पाई जाती हैं । जो पाई जाती हैं, वे अति संक्षिप्त होती है ।

देओरी समाज की अधिकतर लोक कथाएँ धर्म से जुड़ी है । जो समाज प्रकृति की पूजा करते थे, अब उनका हिन्दू धर्म की ओर झुकाव अधिक है । अन्य आदिवासी समाज की तरह देओरी समाज की लोक कथाओं में प्रकृति, समाज के इतिहास, सृजन आदि का हवाला तो हैं ही, पर साथ ही धार्मिक तथा नैतिक उद्देश्य भी सदा रहता है । उदाहरण – देओरी समाज बहुत ही धार्मिक समाज है । उनके इष्टदेव "कुंदी मामा" हैं, इनको वे अपना इष्टदेव मानते हैं । देओरी लोक कथाओं के कई रूप मिलते हैं। जैसे –सृजन के मिथक, प्रेम कथाएँ, कायांतरण, मानवीकरण की कथाएँ, मुर्खता व चतुराई की कथाएँ, उपदेशात्मक कथाएँ, सांस्कृतिक कथाएँ, शौर्यगाथाएँ आदि ।

देओरी समाज के सृजन के मिथकः "सृष्टि, पृथ्वी–आकाश–मनुष्य, प्रकृति–बादल–बिजली, सूर्य–चन्द्रमा, पेड़–पौधे, अग्नि–जल–हवा, पशु–पक्षी, वर्षा–सुखाड़, नद–नदी–नाले, मनुष्य निर्मित वाधयंत्र, बांसुरी, सेरजा, नगाड़ा, ढोल आदि की उत्पत्ति व सृजन से जुड़े मिथक अत्यंत ही कल्पनाशील, तार्किक और कहीं–कहीं विकास की सीढियां चढते हुए इतने वैज्ञानिक लगते हैं कि डार्विन की याद आ जाती है ।"[6] देओरी जनजाति की सृजन के कई रूपांतर कथाएँ हैं, जिनमें कहीं पानी से मिट्टी छानकर, तो कहीं मिट्टी गुथकर धरती के निर्माण की कथा है । कहीं दो अंडों, दो जीवों या पुतलों के निर्माण से मनुष्य के निर्माण की कथा मिलती है ।

लोक कथाओं में कायांतरणः लोक कथाओं का एक मुख्य केंद्र है कायांतरण । रूप धारण करने की प्रक्रिया को भी कायांतरण कहते हैं । इसमें मनुष्य कभी राक्षस या कभी पशु–पक्षी का रूप धारण कर लेते हैं तथा कभी पशु–पक्षी या राक्षस, मनुष्य का रूप धारण कर लेता है । देओरी समाज में ऐसी कई लोक प्रचलित कथाएँ है । जंगलों में बाँस के झुण्ड अँधेरे में कैसे प्रेत आत्माएं बन जाती हैं । तथा सबसे प्रचलित, देओरी समाज के इष्टदेवी तामेश्वारी माता का मुर्गी का रूप धारण कर समय से पहले अंधकार छठा देना । ऐसी कई लोक कथाएँ मौजूद हैं । देओरी समाज में माना जाता है कि बुरी प्रवृत्तियाँ या बुरी शक्तियाँ ही कायांतर करती है और मनुष्य को ठगती हैं । कई बार मनुष्य भी बुरी प्रवृत्तियों के विनाश के लिए कायांतर करते हैं । कई कायांतर मुर्खतावश भी होते हैं । हर समुदाय में कायांतर के विभिन्न रूप होते हैं ।

प्रकृति का मानवीकरणः अन्य जनजातियों की तरह देओरी समाज की लोक कथाओं में भी प्रकृति का मानवीकरण देखने को मिलता है । इनकी लोक कथाओं में पशु–पक्षियों में मानवीय संवेदना से ओतप्रोत होती हैं और पशु–पक्षी मनुष्य का रूप धारण करके मनुष्य की सहायता करते हैं तथा कभी–कभी इसके विपरीत भी होता है । वे मनुष्य बनकर मनुष्य को धोखा भी देते हैं। सभी जनजातियों में ऐसी लोककथाएँ बहु चर्चित हैं । इसीलिए देओरी समाज में कहा जाता है कि अँधेरे में किसी के पुकारने पर प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए । तीन बार पुकारने के बाद ही उत्तर देना चाहिए । अन्यथा प्रेत इंसान का रूप धारण कर लेते हैं ।

उपदेशात्मक लोक कथाएँः जनजातियों में उपदेश देने की कथाएँ सामान्य सी बात है । उनकी हर कथा के पीछे कुछ–न–कुछ उपदेश रहता ही है । उनकी लोककथाओं में घटना क्रम या उसका निष्कर्ष स्वयं ही मनुष्य में सही–गलत की पहचान करा देता है । इन समाज में घटना द्वारा उपदेश का ज्ञान होता है और होता है सीधे–सादे मानव की मानवता और प्रकृति में उसकी आस्था । उनकी प्रकृति में गहन आस्था है । तभी इक्कीसवीं सदी में तथा विज्ञान के दौर में उनका प्रकृति के प्रति आस्था को कोई डगमगा नहीं सका है । देओरी समाज ही असम की एक मात्र जनजाति समाज है जिसमें इसाई धर्म लेने वाले की संख्या न के समान है । अब इसे कट्टरपंथी कहें या आस्था ?

उपसंहार

जनजातियों में अन्य धर्मों की चमत्कारिक कथाओं की तरह आस्था जगाने के लिए चमत्कार, अजूबे या परा–शक्तियों का सहारा नहीं लिया जाता। ये उनके सीधे–सादे अनुभवों तथा उनके पूर्वजों के संघर्षों की कथाएँ होती हैं। संस्कृति उनके जीवन का हिस्सा है और जीवन के रहने की शैली

---

[4] Taid, Tabu Ram (2013)

[5] Bordoloi, N. B., Thakur, Sharma, G. C., & Saikai, M.C (1987). *Tribes of Assam*, Guwahati: Tribal Research Institute, Assam.

[6] रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक और लोककथाएँ, पृ. 15

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उनकी संस्कृति। इसीलिए जीवन से जुड़ी उनकी ये लोक कथाएँ, उनकी संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो उनके पारिवारिक रिश्तों की गरिमा को भी व्याख्यायित करते हैं । जनजातियों की समस्याओं पर बाते करते हुए जिस समस्या को सर्वप्रथम देखना चाहिए, वह है उनकी समस्याओं के वास्तविक स्वरूप को समझना। वर्तमान में इनकी स्थिति दयनीय है, एक वर्ग जीवन के कुछ पक्षों में परिवर्तन चाहता है, तो दूसरा वर्ग अपनी पुरातन परम्पराओं से चिपका हुआ है। इसके लिए हमें एक बीच का रास्ता निकालना होगा, ताकि सभी लोग उपयोगी नवीन परिवर्तन को अपना सके और अनुपयोगी पुरातन व्यवस्थाओं और परम्पराओं को त्याग सके। लोक व्यवहार में, लोकहित के लिए लोकभाषा में लोकविचार को प्रवाहशील शैली में, लोक द्वारा प्रस्तुत साहित्य को लोकसाहित्य कहते हैं । सही अर्थ में लोक साहित्य लोकजीवन तथा संस्कृति को प्रतिबिंबित मात्र नहीं करता, बल्कि उसका संवाहक भी है । लोकसाहित्य के निर्माता अज्ञात होते हैं और धरती के अनेक लोगों का अनुभव इसमें संचित है । सामूहिक भावना और सरल अभिव्यक्ति के चलते व्यापक जनता को अपनी ओर आकर्षित करने में लोक साहित्य सक्षम है । इसमें न औपचारिकता के चक्कर हैं, न परिमार्जनों का चक्कर है । सहजता, सरलता और प्रवाहमयता लोकसाहित्य के प्रमुख गुण हैं । जनजाति कलाओं का दृष्टिकोण सर्वथा उपयोगीवादी रहा है । इस सन्दर्भ में वेरियर एल्विन का कथन इस बात की पैरोकार करता है– “आदिवासी की कला का असली महत्त्व उपयोगिता की दृष्टि से है । इसलिए हम उसे उपयोगिता अथवा सामाजिक उपादेयता से अलग करके कभी भी नहीं समझ सकते । आदिवासिओं में कला, कला के लिए नहीं होती । इनके लिए कला धार्मिक अथवा जादू टोन के उद्धेश्य की पूर्ति करती है और इनका सामाजिक महत्व होता है । इनकी कला का लक्ष्य मात्र सौन्दर्य अथवा अलंकरण नहीं होता ।”लोक कथा का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से अनुभवों का आदान–प्रदान, मानवता की शिक्षा, अपने कर्मों के प्रति सजक रहने की प्रेरणा दी जाती है । इसीलिए इन कथाओं में प्रेत आत्माओं के भय की कल्पना और विभिन्न प्रकार के मिथक विद्यमान हैं जिससे मनुष्य ऐसे कार्य न कर सके जिससे उसे प्रेत–बाधा से कष्ट भोगना पड़े । देओरी जनजातियों की ये कथाएँ तथा मिथक उनके पूरे समाज के व्यक्ति के प्रति सामूहिक संवेदना का प्रतीक है । इनकी ये लोक कथाएँ, चाहे वह सृष्टि–सृजन की हों या सभी में प्रश्नों के साथ–साथ उनके उत्तर भी मौजूद हैं । उसके साथ ही सृष्टि और प्रकृति के प्रत्येक अंग और पक्ष की व्याख्या मिल जाती है । जनजातियां जो प्रकृति की पूजा करते हैं, उनके पास बौद्ध, हिन्दू, ईसाई आदि धर्मों की तरह धर्म ग्रन्थ अनुपस्थित है, जिसके कारण भी धर्म की अपनी ही परिभाषाएँ हैं । ये कथाएँ उनकी जिज्ञासा का परिणाम है । उनके भीतर कई प्रश्न उठे, उनके उद्‌गम की, उनके उत्पत्ति की, उनके अस्तित्व की, जिसके फलस्वरूप ये लोक कथाएँ, लोक गाथाएँ हमारे समक्ष आई । किसी एक समाज को जानने का सबसे बेहतरीन ज़रिया है, उस समाज का लोक साहित्य । अर्थात सभी प्रकार के रचना–तंत्र के लिए संस्कृति मूल उपादान का कार्य करती है और साहित्य उसकी चरम रचनाधर्मिता का ही अवदान है । लोक साहित्य, लोक संस्कृति का एक स्वरुप है । लोक संस्कृति में व्यापकता है तथा लोक साहित्य उसका एक अंग है, दोनों एक दूसरे के पूरक है । दोनों को अलग नहीं किया जा सकता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहबाद ।
2. सिंह, शरद (2014), भारत के आदिवासी क्षेत्रों की लोककथाएँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली ।
3. त्रिपाठी, व्यासमणि (2012), अंडमान तथा निकोबार की लोक–कथाएँ , साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ।
4. बंधू, चूड़ामणि (2009), नेपाली लोकसाहित्य, एकता बुक्स, काठमांडो ।
5. सिंह, रसाल, मीणा, बन्ना राम (2014), आदिवासी अस्मिता वाया कथा साहित्य, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली ।
6. गुप्ता, रमणिका (2013), पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ।
7. चतुर्वेदी, शिवम् (2018), लोक साहित्य और व्यावहारिक भाषा, फर्स्ट प्रिंट पब्लिकेशन, इलाहाबाद ।
8. गिरी, जीवेन्द्र देव (2010), नेपाली लोक साहित्यमा जन जीवन, एकता प्रकाशन, काठमांडू ।
9. Bordoloi, N. B., Thakur, Sharma, G. C., & Saikai, M.C (1987). *Tribes of Assam*, Guwahati: Tribal Research Institute, Assam.
10. Barua, S.N, *Tribes of Indo–Burma border socio – cultural history of the inhabitants of the patkai range,* mittal publication, New Delhi, 1991.
11. Deori, Oaban “A brief outline of Deori Traditional Culture and Necessity of Remedies”. *Dagarbena.* December 2014. Issue no. 2:89-101.
12. Deori, Umananda “Sro-Dharma Sanskriti aru samajik riti niti Rokhona Bekhonot”. *Dagarbena.* December 2016. Issue no. 4: 67-71.
13. Deori, Prabin kumar “Jonojati Poromporagot Aasar aru Bebohar” *Sigasi*, November 2015: 35-39.